P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

SEVA-DHAM HOSPITAL

(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)

Relax Your Body, Mind & Soul In A Spiritual Environment

Truly rejuvenating treatment packages through
Relaxing Traditional Kerala Ayurvedic Therapies

COMPLETE BODY WORKSHOP
SEVA-DHAM HOSPITAL

SEVA-DHAM HOSPITAL

K. H.-57, Ring Road, Behind Indian Oil Petrol Pump, Sarai Kale Khan,
New Delhi-110013. Ph. : +91-11-26320000, 26327911 Fax : +91-1126821348
Mobile 9999609878, 9811346904, Website : www.sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
दिसम्बर, 2010

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 10 अंक : 12 दिसम्बर, 2010

: मार्गदर्शन :

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: सम्पादक :

श्रीमती निर्मला पुगलिया

: परामर्शदाता :

डॉ. राजाराम 'अबोध'

: सह सम्पादक :

श्री मनोज कुमार

: व्यवस्थापक :

श्री अरूण तिवारी

एक प्रति	: 5 रुपये
वार्षिक शुल्क	: 60 रुपये
आजीवन शुल्क	: 1100 रुपये

: प्रकाशक :

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)

पोस्ट बॉक्स नं. : 3240

सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013

फोन नं.: 26315530, 26821348

Website: www.manavmandir.com

E-mail: contact@manavmandir.com

इस अंक में

01. आर्ष वाणी - 5
02. बोध कथा - 5
03. संपादकीय - 6
04. गुरूदेव की कलम से - 7
05. चिंतन-चिरंतन - 13
06. गीतिका - 15
07. ध्यान - 16
08. भजन - 18
09. लोभ पर विजय - 19
10. गांधीजी की सीख - 20
11. गजल - 20
12. सेवा का संकल्प - 21
13. कहानी - 22
14. कविता - 24
15. स्वास्थ्य - 25
16. चुटकुले - 26
17. बोलें तारे - 27
18. समाचार दर्शन - 29
19. संवेदना-स्मरणांजलि - 30
20. झलकियां - 33

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युस्टन, अमेरिका
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास गोयल सुनाम पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेनू फ्रेंसिस्को
डॉ. अशोक कृष्णा जैन, लॉस एंजिलिस
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युस्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युस्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन, न्यू अशोक नगर, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार

आर्ष वाणी

यै समं क्रीड़िता येच भृश मीडिता
यै सहाकृष्महि प्रीति-वादम्
तान् जनान् वीक्ष्य वत् भश्मभूयंगतान्
निर्विशंकास्म इति धिग् प्रमादम्

-आचार्य यशोविजय सूरी जी

जिनके साथ क्रीड़ाएं की, जिन अर्चनीय महानुभावों की पूजाएं की, जिनके साथ मित्रता और प्रेम किया, उन सब लोगों को भष्मसात् देखकर भी हम लोग निर्विशंक यानी निश्चिन्त बैठे हैं, धिक्कार है हमारे ऐसे प्रमाद को।

बोध-कथा

सफलता का रास्ता

यह उस समय की बात है जब थॉमस अल्वा एडीसन जी जान से बिजली की खोज में जुटे थे। वे पिछले तीन वर्षों से प्रयोगों में लगे थे पर उन्हें सफलता नहीं मिल रही थी। उनके सभी सहयोगी हार मान चुके थे मगर एडीसन के उत्साह में कोई कमी नहीं आई थी।

एक दिन सभी सहयोगियों ने आपस में विचार-विमर्श किया फिर एडीसन से कहा, 'आप बेकार ही बिजली की खोज में लगे हुए हैं। तीन वर्षों में हमने लगभग सात सौ प्रयोग करके देख लिए हैं पर अभी तक आशा की किरण नजर नहीं आई है सात सौ बार असफल होना ही इस बात का सबूत है कि हम अपनी मेहनत और समय व्यर्थ खर्च कर रहे हैं।'

इस पर एडीसन ने कहा, 'मुझे पता है कि हम सात सौ बार असफल हो चुके हैं। तभी तो मेरा उत्साह दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता है। अगर हम मान लें कि किसी खोज में हमारे एक हजार प्रयास असफल हो सकते हैं तो उनमें से सात सौ प्रयास असफल हो सकते हैं। लेकिन इसी बीच तीन सौ प्रयास और हो जाते हैं तो निश्चित रूप से मंजिल उनमें ही कहीं छिपी हुई है। अब तो हम मंजिल के करीब आते जा रहे हैं। ऐसे में घबराने की नहीं हिम्मत से काम लेने की जरूरत है।' ठीक इस घटना के छह महीने बाद एडीसन और उनके सहयोगी बिजली का आविष्कार करने में सफल हो गए।

किसी कार्य में सफलता भी मिलती है, जब व्यक्ति जी जान से उसमें लगा रहता है। जमीन से पानी प्राप्त करने के लिए उसे बहुत गहराई तक खोदना पड़ता है। बीज बोते ही तत्काल उसके फल नहीं लगते। इसमें धैर्य रखना पड़ता है। हमने धीरज रखी तो हम सफल हो गए। मेरे उत्साही साथियों में कभी धैर्य नहीं खोना है।

सम्पादकीय

जीवन का असली प्रकाश है धर्म

रोशनी का कोई भी मजहब नहीं,
मजहबों का इसलिए मतलब नहीं।

हम समय-समय पर आने वाले त्यौहरों को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। त्यौहार आते हैं हर वर्ष प्रकाश करते हैं लेकिन यह सब बाह्य है सच्चा प्रकाश है वह है हमारे भीतर और हमें उसको प्रज्वलित करना चाहिए।

महाभारत में कहा गया है। 'धर्मो रक्षति रक्षितः' यह एक सुभाषित हैं। हमारी व्याख्या के अनुसार मनुष्य की धार्मिक वृत्ति उसकी सुरक्षा करती है। यह व्याख्या सार्थक तो है पर प्रश्न है कि धर्म अपने आप में है क्या? वास्तव में तो धर्म का न कोई नाम होता है और न कोई रूप। व्यक्ति के आचरण, व्यवहार या वृत्ति के आधार पर ही उसे धार्मिक अथवा अधार्मिक होने का प्रमाणपत्र दिया जाता है।

वास्तव में समता, संतुलन, साहिष्णुता, संतोष, सामंजस्य आदि गुण ही तो धर्म है। धर्म का संबंध विरक्ति से है। विषयों की आसक्ति से नहीं। भ. महावीर ने कहा है कि पीया हुआ कालकूट विष, विधिपूर्वक नहीं पकड़ा हुआ शस्त्र जिस प्रकार विनाशकारी होता है, वैसे ही विषयों से युक्त धर्म विनाशकारी होता है। जिस व्यक्ति की वृत्तियों में धार्मिकता हो, जिसके व्यवहार में धर्म की पुट हो, जिसका चिंतन धर्म से अनुप्राणित हो और जो धर्म को परिधान नहीं, आत्मा मानता हो, वह धर्म की दिव्यशक्ति द्वारा सदा सुरक्षित रहता है। यह प्रार्थना कार्यरतापूर्ण है कि हमारे जीवन में दुःख न आएं। दुःख और कठिनाइयों में मनोबल बना रहें। यह मांग व्यक्ति को अहंकार से बचाने वाली और पुरूषार्थी बनाने वाली है।

श्री श्रीमद्भागवत के प्रथम स्कन्ध में कुंती का आत्म निवेदन महत्वपूर्ण है। उसने मनोबल बढ़ाने की प्रार्थना के स्थान पर विपदाओं को आमंत्रित किया। प्रभो! मेरे पग-2 पर निरंतर विपत्तियां रहें क्योंकि मैं जब विपदाओं से घिरी रहती हूं। तभी आप के दर्शन होते हैं आपके दर्शन मेरे लिए मुक्ति के दर्शन हैं। धार्मिक वृत्ति को सुरक्षित रखने वाला व्यक्ति कभी दुखी नहीं हो सकता। और धार्मिक वृत्ति को खोने वाला कभी सुखी नहीं बन सकता इसलिए सुखी और शांत जीवन जीने के लिए धार्मिक वृत्ति की सुरक्षा जरूरी है।

मैं धर्म की सीमाओं को नहीं बांधती अगर मैं कहूं कि जैन हूं, या क्रिश्चियन हूं, या फिर सनातनी हूं। तो ये कोई धर्म नहीं है। धर्म तो अपने आप में निर्विशेषण है, धर्म कभी अपने आप में बन्धता नहीं वह तो शाश्वत है। उसका प्रकाश तो हर जगह फैला है।

○ निर्मला पुगलिया

जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है

यह सम्पूर्ण सृष्टि जीवमय है। एक सुई के नोक जितना भी इसका हिस्सा जीवाणु-रहित नहीं है। भगवान महावीर कहते हैं- यह मिट्टी भी सचेतन है, जल भी सचेतन है, अग्नि भी सचेतन है, हवा भी सचेतन है, वनस्पति भी सचेतन है और क्षुद्र कीट पतंगों से लेकर हाथी और मनुष्य तो स्पष्टतः सचेतन हैं ही। शास्त्रों के इस कथन के साथ आज का विज्ञान भी सहमत है। इस स्थिति में प्रश्न यह उठता है एक देहधारी के लिए क्या संपूर्ण अहिंसामय जीवन सम्भव है। उसे अपने जीवन के लिए रोटी, पानी, आवास आदि सबकुछ चाहिए। रोटी के लिए उसे खेती करनी होगी। पानी के लिए उसे जलाशय बनाने होंगे। भोजन पकाने तथा प्रकाश पाने के लिए उसे अग्नि का उपयोग करना होगा। सांस के लिए उसे हवा चाहिए। आहार के लिए फल तथा अन्न आदि वनस्पति का उपभोग करना होगा। आवास के लिए भवन बनाने होंगे, जिनके निर्माण में मिट्टी, पानी के साथ-साथ छोटे-मोटे जीव-धारियों की हिंसा निश्चित है। कृषि में भी अनेक प्राणियों का वध होता ही है। फिर सम्पूर्ण अहिंसा की चर्चा क्या अपने में बेमानी ही नहीं है। इस प्रश्न के उत्तर से पहले, मैं सोचता हूं, अहिंसा की परिभाषा पर थोड़ी-सी चर्चा हो जाना प्रासंगिक ही रहेगा।

अहिंसा की परिभाषा

साधारणतया अहिंसा का अर्थ है किसी भी छोटे, बड़े प्राणी का वध नहीं करना, अंग-भंग नहीं करना, कष्ट नहीं देना, नहीं सताना। इस परिभाषा को थोड़ा और विस्तार देते हुए कहा गया- सर्व प्राण, भूत, जीव और सत्त्वों का हनन नहीं करना, उन पर शासन, हुकूमत नहीं करना, उनको दास नहीं बनाना, उनको परिताप-संताप नहीं देना, उनका प्राण-वियोजन नहीं करना। अहिंसा की इस परिभाषा में लगभग सभी धर्मशास्त्र सहमत हैं। किन्तु गहराई में जाने पर हमें मानना होगा कि अहिंसा की यह परिभाषा बहुत स्थूल और अधूरी है। इसको सम्पूर्ण मान लेने पर स्वयं अहिंसा और उसकी व्यावहारिक उपयोगिता पर ही अनेक प्रश्न-चिह्न लग जायेंगे।

एक उदाहरण लें। एक व्यक्ति अपने शत्रु को मारना चाहता है, उसका अंग-भंग करना चाहता है, उसे दुःख संताप देना चाहता है, उसे दास बनाना चाहता है, उसे हुकूमत में लेना चाहता है, उसका प्राण-वियोजन करना चाहता है, किन्तु ऐसा चाहते हुए भी वह कुछ नहीं कर पाता है, क्या उसे अहिंसक माना जाए यद्यपि वह हिंसा की आग में तिल-तिल जल रहा है, किन्तु असमर्थता-वश अपने शत्रु का कुछ भी बिगाड़ नहीं पाता है। क्या वह अहिंसा-सेवी है इसके ठीक विपरीत दूसरा उदाहरण लें। एक मरीज भयंकर वेदना से तड़प रहा है, मृत्यु के साथ जूझ रहा है, उसके प्राणों को बचाने के लिए एक डॉक्टर उसका आपरेशन करता है, चाकू से उसके अंग को चीरता है, संयोग-वश फिर भी वह बच नहीं पाता है, इस अवस्था में क्या उस डॉक्टर को उसका हत्यारा माना जाए।

अहिंसा की उपरोक्त परिभाषा के अनुसार पहला व्यक्ति अहिंसक माना जाना चाहिए। क्योंकि वह न किसी को मार रहा है, न अंग-भंग कर रहा है, न दास बना रहा है, न किसी को दुःख-संताप दे रहा है, नहीं किसी का प्राण-वियोजन कर रहा है। और दूसरा व्यक्ति हिंसक माना जाना चाहिए क्योंकि उनके द्वारा अंगच्छेद हो रहा है, प्राण-वियोजन भी हो रहा है। किन्तु वस्तुतः ऐसा है नहीं। न पहला व्यक्ति अहिंसक है और न दूसरा हिंसक। क्योंकि पहले व्यक्ति का चित्त हिंसा से भरा है, इसलिए शरीर के तल पर वह किसी की हिंसा न करते हुए भी हत्यारा है। दूसरे व्यक्ति का चित्त अहिंसा और दया से भरा है, इसलिए शरीर के तल पर उसके द्वारा हत्या होते हुए भी वह अहिंसक है, हत्यारा नहीं है।

महत्त्वपूर्ण है चित्त-दशा, न कि घटना

जैन पुराणों का एक प्रसंग है। भगवान महावीर के मुख से अपने नरक गमन की भविष्यवाणी सुनकर मगधापति बिम्बसार बहुत विचलित हो उठा। उसने चिंतातुर स्वर में पूछा- भगवन्, क्या कोई उपाय है जिससे मेरा यह नरक बंधन टल जाए। महावीर ने कहा, अवश्य है। अगर तेरे नगर का काल-सौकरिक कसाई एक दिन के लिए प्रतिदिन मारे जाने वाले पांच सौ भैंसों का वध न करे, तो तेरा नरक बन्धन टल सकता है।

भारी मन से बिम्बसार राजमहलों में आया। उसने काल-सौकरिक को बुलाकर आग्रह किया कि वह एक दिन के लिए पांच सौ भैंसों का वध न करे। कालसौकरिक ने अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। राजा ने प्रलोभन दिया। फिर भी वह नहीं माना। उसका कहना था प्रतिदिन पांच सौ भैंसों का मारना उसकी वंश परम्परा है। वह अपने परम्परागत नियम को कैसे तोड़ सकता है।

राजा झुंझलाया। उसने कालसौकरिक को एक दिन के लिए अन्धकूप में छोड़ दिया। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी। कुएं में भैंसे होंगे ही नही, फिर वह किसको मारेगा लेकिन कालक भी अपनी धुन का पक्का था। उसने कुएं में ही अपने आसपास की मिट्टी को इकट्ठा किया। उस मिट्टी का एक भैंसा बनाया। अपने हाथ का खड़ग बनाया और फिर उस भैसे का सिर धड़ से अलग करते हुए बोला, यह मारा एक, फिर मिट्टी को इकट्ठा किया। उसका भैंसा बनाया। उसे हाथ की खड़ग से फिर मारते हुए बोला, यह मारा दो। दिनभर यही सिलसिला चलता रहा। और कुछ काम था भी नहीं। इस प्रकार उसने गिन-गिन कर पूरे पांच सौ भैंसे मारकर ही सुख की सांस ली।

दूसरे दिन बिम्बसार श्रेणिक भगवान महावीर के चरणों में पहुंचा। उसका मन कुछ आश्वस्त था कि उसने कालक कसाई को कल पांच सौ भैंसों का वध नहीं करने दिया। किंतु भगवान महावीर ने सारा रहस्य खोलते हुये उसे बताया कि कालक ने तो पांच सौ भैंसें मार लिये हैं। यह सुनते ही राजा का मन उदास हो गया। उसका सारा श्रम ही बेकार चला गया था।

अब हम इसी घटना को अहिंसा की परंपरागत परिभाषा की कसौटी पर कसें तो कालक कसाई ने कोई भी हिंसा का आचरण नहीं किया है। उसने किसी का वध नहीं किया है, न किसी को कष्ट-संताप दिया है, अतः वह हिंसक नहीं होना चाहिये। किन्तु महावीर कहते हैं, कालक हिंसक है, उसने पांच सौ भैंसे मार लिये हैं, हिंसा का आचरण कर लिया है। घटना के स्तर पर चाहे उसने किसी का वध न किया हो किंतु चित्त की भूमिका पर वह वध कर चुका है। इसलिये कालक हिंसक है।

इस घटना से स्पष्ट होता है कि शरीर के तल पर होने वाली घटना का महत्व नहीं, किन्तु महत्व है हमारी चित्त दशा का। यदि मन में हिंसा है, बाहर से हम अहिंसक होते हुये भी हिंसक ही हैं। मन में यदि अहिंसा है, तो बाहर से हिंसक-प्रवृत्ति होते हुई भी हम अहिंसक हैं। अनेक शास्त्रीय उदाहरण इसके साक्षी हैं। भगवान ऋषभदेव की माता मरुदेवी हाथी के ओहदे पर बैठी-बैठी निर्वाण को उपलब्ध हो जाती है। चक्रवर्ती भरत राजमहलों का जीवन जीते हैं, शासन व्यवस्था का संचालन करते हैं, युद्ध भी लड़ते हैं, और एक दिन वही जीवन जीते-जीते कैवल्य को प्राप्त कर लेते हैं। प्रश्न होता है यह कैसे सम्भव है। शास्त्रकार कहते हैं- यह इसलिए संभव है कि भरत शरीर के तल पर राजमहलों का जीवन जीते हुए भी, वे भीतर में, राजमहलों में नहीं हैं। शरीर से युद्ध मैदान में मार-काट करते हुए भी वे भीतर से उसमें कहीं आसक्त नहीं हैं। भीतर से वे युद्ध से जुड़े हुए नहीं है, इसलिए बिना किसी तप, जप, योग, ध्यान और साधना के भी वे कैवल्य को प्राप्त हो जाते हैं।

सनातन धर्म परम्परा में इसी को लीला कहा गया। उसके मत में यशोदा नन्दन श्रीकृष्ण लीला पुरूष हैं। वे राजनीति करते हैं, राजनीति में छल-कपट का सहारा भी लेते हैं, युद्ध का संचालन भी करते हैं, किन्तु यह सब कुछ करते हुए भी वे भीतर से उसमें नहीं हैं। यह उनकी लीला है। लीला यानि शरीर तल पर सांसारिक क्रियाओं को संपादित करते हुए भी भीतर से उनमें लिप्त नहीं होना, आसक्त नहीं होना। श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का प्रमुख संदेश यही अनासक्ति योग है।

यदि हमारा भीतरी चित्त हिंसा से भरा है, शरीर तल पर घटित होने वाली हिंसा का अपने में कोई अर्थ नहीं है। यदि हमारा भीतरी चित्त अहिंसा से भरा है, बाहरी शरीर तल पर घटित होने वाली हिंसा का अपने में कोई अर्थ नहीं है। भीतरी चित्त दशा के आधार पर ही बाहरी घटनाएं अपने सही अर्थ पा सकेंगी। इसी के आधार पर चित्त में अहिंसा और अनुकंपा से भरा एक डॉक्टर के हाथों से अगर किसी का प्राणांत हो भी जाए तो भी वह हत्यारा नहीं होगा। यह सारा निर्णय भीतरी चित्त दशा के आधार पर होगा, बाहरी घटनाओं के आधार पर नहीं।

<u>क्या प्राणि-हिंसा हिंसा नहीं</u>

यहां यह प्रश्न स्वाभाविक है कि अनासक्त चित्त से होने वाली प्राणि-हिंसा को क्या हिंसा नहीं माना जाना चाहिये? उत्तर भी इसका स्पष्ट है। जिस चित्त में किसी प्रकार की आसक्ति नहीं है, न राग-द्वेष है, न बैर-घृणा है, उस अनासक्त चित्त से होने वाली हिंसा को निश्चय से हिंसा नहीं माना जायेगा। तभी तो माता मरुदेवी, चक्रवर्ती भरत निर्वाण और कैवल्य को प्राप्त हो जाते हैं। ये दो ही उदाहरण नहीं, बीसियों उदाहरण जैन परंपरा में मिलते हैं। सनातन परंपरा में नारायण श्रीकृष्ण भी इसके प्रखर उदाहरण हैं। और भी बहुत सारे उदाहरण इस सन्दर्भ में दिये जा सकते हैं। यदि मरुदेवी, भरत और श्रीकृष्ण अनासक्त चित्त से सम्पादित हिंसा कर्म से हिंसा-मुक्त रह सकते हैं, तो दूसरा कोई भी उस चित्त अवस्था को प्राप्त कर ले, इसमें अपत्ति क्यों होनी चाहिये।

वस्तुतः प्राणि-हिंसा व्यावहारिक हिंसा है और प्राणि-दया है व्यावहारिक अहिंसा। निश्चय दृष्टि यह है, न कोई किसी को बचाने वाला है, न ही कोई किसी को मारने वाला है। सब अपना-अपना जीवन जी रहे हैं, अपना-अपना मरण कर रहे हैं। कोई किसी को न मारे, फिर भी मृत्यु आने पर सबको मरना है। कोई किसी को न जिलाये, किन्तु सबको अपना जीवन जीना ही है। इसलिए मारने वाला तथा बचाने वाला तथा मरने वाला और

बचने वाला, ये सब व्यवहार हैं। और इसी व्यवहार के स्वस्थ निर्वाह के लिये हिंसा और अहिंसा की यह व्यावहारिक परिभाषा दी गई है।

<u>हिंसा किसकी</u>

जब कोई किसी को मारता है हम उसे हिंसा कहते हैं। यहां प्रश्न होता है, किसकी होती है हिंसा आत्मा को आत्मा की हिंसा तीन काल में भी नहीं हो सकती। आत्मा अमर है, कभी मरती नहीं है। आत्मा अज है वह कभी जन्म नहीं लेती। आत्मा अजर है, वह कभी जरा को प्राप्त नहीं होती। आत्मा अविनाशी है, उसका कभी विनाश नहीं होता। फिर किसकी होती है हिंसा। शरीर की शरीर तो स्वयं मृत है, मृत का कैसा मरना। माटी को तो माटी में मिलना ही है। शरीर तो मरण-धर्मा है, इसका स्वभाव ही है मरण का। फिर मरण का मरण क्या फिर किसकी होती है हिंसा इन्द्रियां, मन, बुद्धि और प्राणों की ये आत्मा और शरीर से अलग तो नहीं। इनकी क्या हिंसा फिर सवाल गूंजता है, हिंसा में किसकी होती है हिंसा अहिंसा में किसकी होती है अहिंसा।

<u>हिंसा भी अपनी, अहिंसा भी अपनी</u>

जहां से यह सवाल गूंजता है, वहीं से फूटता है उत्तर। हिंसा में अपनी ही होती है हिंसा। अहिंसा में अपनी ही होती है अहिंसा। दूसरे की हिंसा या दूसरे की अहिंसा, यह केवल व्यवहार है। वास्तव में हिंसा अहिंसा अपनी ही है। भगवान महावीर कहते हैं- तुमंसि णाम सच्चेव जं हंतव्यं ति मन्नसि- जो हंतव्य है, जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू दास बनाना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू हुकूमत/शासन में लेना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू सन्ताप-परिताप देना चाहता है, वह तू ही है। जिसके तू प्राण लेना चाहता है, वह तू ही है। इसलिये जब तू औरों को मारता है, तब अपने को ही मारता है। जब तू औरों के प्राण लेता है, तब अपने ही प्राण लेता है, औरों की हिंसा करता है, तब निश्चय में अपनी ही हिंसा करता है।

या इसको ऐसे कहें कि जब हिंसा अपनी होगी, तब अहिंसा भी अपनी ही होगी। जब घृणा अपनी होगी तो दया भी अपनी होगी।

तुलसी दया न पार की, दया आपकी होय
तू किसको मारे नहीं, तुझे न मारे कोय।

हिंसा भी अपनी है, दया और अहिंसा भी अपनी है। सब कुछ अपना है। पराया कुछ है ही नहीं। फिर पर का मरना या जीना, इससे हिंसा और अहिंसा का सम्बन्ध हो ही कैसे सकता है।

दूसरे से जुड़ी हुई हिंसा या दया यह सब व्यवहार है। हम व्यवहार में जीते हैं, इसलिए व्यवहार की व्यवस्थाएं भी खड़ी करनी होती है। किन्तु उनका महत्व व्यवहार जितना-सा ही होता है। चिन्तन की गहराई में वे न टिक पाती हैं और न ही व्यवहार-हिंसा या अहिंसा के आधार पर किसी प्रकार को जीवन-शैली की परिकल्पना भी की जा सकती है। प्रवृत्ति मार्ग में तो यह सम्भव है ही नहीं, निवृत्ति मार्ग में भी अन्ततः अनेक-अनेक आपदाओं को स्वीकार करना ही पड़ता है। भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति भौतिक वस्तुओं से ही सम्भव हो पाती है, उस स्थिति में हर देहधारी को कमी-बेस व्यावहारिक हिंसा का सहारा लेना ही होता है।

<u>प्रमाद ही हिंसा</u>

निष्कर्ष की परिभाषा में कहा जा सकता है हिंसा या अहिंसा का सम्बन्ध प्रमुखतः चित्त-वृत्ति से होता है, प्रवृत्ति से नहीं। जहां शरीर है, वहां प्रवृत्ति है। जहां प्रवृत्ति है वहां किसी न किसी रूप में हिंसा जुड़ी है। फिर शरीर-धारण से जुड़ी प्रवृत्तियां हर किसी को करनी ही होगा। इस स्थिति में प्रवृत्ति-जन्य हिंसा से बचना सम्भव ही नहीं है। श्रीमद्‌भगवत गीता के शब्दों में ''सर्वारंभाहि दोषेन धूमेनाग्नि रिवावृता'' सब प्रवृत्तियां हिंसा दोष से दूषित है। जैसे अग्नि घूम से। किन्तु अगर हमारे चित्त में किसी प्रकार का राग, द्वेष या कषाय नहीं है, उस चित्त दशा में होने वाली प्रवत्ति-जन्य हिंसा बन्धन के कारण नहीं बनती है। भगवान महावीर के सामने प्रश्न आया, हम कैसे चलें, कैसे बोलें, कैसे खाएं, कैसे बैठें, कैसे सोएं, जिससे पाप का बन्धन न हो। तब महावीर ने यह नहीं कहा- तुम चलो मत, बोलो मत, सोओ मत, पाप का बन्धन नहीं होगा। किसी भी प्रवृत्ति का निषेध नहीं किया महावीर ने। क्योंकि यह सम्भव ही नहीं है। व्यावहारिक भी नहीं है। उन्होंने कहा अप्रमादपूर्वक चलो, बोलो, खाओ, बैठो, सोओ, कोई बन्धन नहीं होगा, अप्रमाद अर्थात अनासक्ति। अनासक्त, वीतराग चित्त से सम्पादित हर प्रवृत्ति अपने में बन्धन-मुक्त होती है।

अप्रमाद अहिंसा है। प्रमाद ही हिंसा है। किसी को मारना, अंग-भंग करना, सन्ताप-परिताप देना, दास बनाना, किसी का प्राण हरण करना, किसी पर आक्रमण करना, किसी का शोषण-उत्पीड़न करना, यह तो प्रमादपूर्ण चित्त की परिणतियां हैं। भीतर का प्रमाद, भीतर की हिंसा ही बाहर इस प्रकार की प्रवृत्तियों में प्रकट होती हैं। मूल है वृत्तियां, उनकी परिणति हैं ये वृत्तियां। वृत्तियां बदलते ही प्रवृत्तियों के अर्थ बदल जायेंगे। अहिंसा की पूर्ण परिभाषा इन वृत्तियों के आधार पर ही सम्भव है, प्रवृत्तियों के आधार पर नहीं।

नारी की चोट ने महाकवि को जन्म दिया

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

भारत के शेक्सपियर कवि कालीदास को संसार में गौरवपूर्ण स्थान पर आसीन कराने वाली उनकी पत्नी राजकुमारी तिलोत्तमा थी।

कालिदास प्रारंभ में एक जड़ बुद्धि ब्राह्मण पुत्र थे। गरीबी के कारण उनके पिता ने छोटी उम्र में ही बकरियां चराने का काम उनके जिम्मे लगा दिया। वे बकरियों को लेकर जंगल में जाते और एक पेड़ की शाखा पर बैठ जाते। जब बकरियां इधर-उधर जाती तो 'काली' 'काली' पुकार कर एक स्थान पर इकट्ठी कर लेते थे। और शाम होते होते अपनी एवड़ को लेकर अपने घर पहुंच जाते।

उधर इस देश की राजकुमारी तिलोत्तमा पर वहां का मंत्री पुत्र मुग्ध था। उसने राजकुमारी के पास शादी का प्रस्ताव भेजा लेकिन राजकुमारी ने यह कहकर उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया कि मैं एक महापंडित से शादी करूंगी फिर चाहे वह गरीब भी क्यों न हो। राजकुमारी के इस उत्तर से मंत्री-पुत्र ने अपने को अपमानित महसूस किया और वह इस अपमान का बदला लेने पर उतर आया।

एक दिन मंत्री-पुत्र शिकार खेलने जंगल में गया जहां उसने उस मूर्ख ब्राह्मण-पुत्र को देखा। उस समय वह मूर्ख ब्राह्मण उस टहनी पर कुल्हाड़ी चला रहा था जिस पर स्वयं बैठा था। मंत्री-पुत्र को राजकुमारी के साथ अपने अपमान का बदला लेने का अच्छा मौका मिल गया। उसने उस मूर्ख ब्राह्मण को राजकुमारी के साथ शादी का लालच देकर पेड़ पर से नीचे उतारा और समझा दिया कि तुम्हें राजदरवार में बुलाया जाए तब चुप रहना मुंह से किसी बात का जबाब मत देना। इधर अपने पिता मंत्री को उस ब्राह्मण पुत्र से राजकुमारी की शादी की सिफारिश राजा से करने के लिए कह दिया।

जब उस मूर्ख ब्राह्मण को राजदरवार में बुलाया गया और सवालों का जबाब देने के लिए कहा गया तब उसके पिता ने कह दिया कि अभी इसकी मौन साधना चलती है। इसलिए सवाल जवाब इशारों में ही हो सकेंगे।

राजकन्या ने अपनी एक अंगुली उठाकर कहा कि ब्रहम एक है। तब वह मूर्ख ब्राह्मण समझा कि यह लड़की मुझे कह रही है कि एक चांटा लगाऊंगी, तब उसने अपनी दो अंगुली ऊपर कर दी यानि तुम एक चांटा लगाओगी तो में तुम्हारे दो चांटे लगाऊंगा। राजकुमारी समझी कि यह दो अंगुली ऊपर करके कह रहा है कि एक ब्रहम है और एक माया है। बस फिर क्या था राजकुमारी उसकी विद्वता से प्रभावित हो गई और शादी के लिए स्वीकृति दे दी लेकिन शादी के समय ब्राह्मण-पुत्र की मूर्खतापूर्ण हरकतों से राजकन्या समझ गई कि मेरे साथ धोखा हुआ है। तब उसने सोचा ऐसे महामूर्ख पति से तो वैधव्य ही अच्छा है। ऐसा सोचकर राजकुमारी ने अपने महल की पिछली खिड़की से वह मूर्ख ब्राह्मण पुत्र को नीचे धक्का दे मारा। नीचे काली माता का मंदिर था। वह ब्राह्मण-पुत्र जैसे ही नीचे गिरा-काली-काली पुकारने लगा क्योंकि वह बकरियों को काली-काली कहकर ही पुकारता था इसलिए उसको वही आदत पड़ी हुई थी। उधर काली माता ने अपना भक्त समझकर उसे विद्या का वरदान दे दिया। कुछ ही समय में वह संस्कृत का महान पंडित बनकर अपनी पत्नी के पास गया। और महल के बाहर द्वार पर दस्तक देकर कहने लगा-

कपाट मुद्घाटय चारुनैत्रे समागतो हं कवि कालिदासः
श्री कालीकायाः कृपयाच याचुद्विजार्थ वर्गेण यथा हि गर्गः

राजकुमारी तिलोत्तमा ने जब अपने पति को महापंडित कालिदास के रूप में पाया तो बोली-अस्ति कश्चिद्-वाग् विशेषः अर्थात् कोई विशेष पंडित वाली बात है? पंडित कालिदास ने पत्नी के इस प्रश्नात्मक वाक्य के एक-एक शब्द पर एक-एक काव्य की रचना कर डाली।

''अस्ति'' पर कुमार संभव, 'कश्चिद्' पर मेघदूत, और 'वाग्' पर रघुवंश की रचना कर कवि कालिदास दुनियां के साहित्य जगत में अमर हो गए। युग-युगान्तर जीवित यश के धनी कवि कालिदास के गरिमापूर्ण व्यक्तित्व की मूलभूत प्रेरणा राजकुमारी तिलोत्तमा ही थी।

❖❖❖

- *दुनियां का सबसे बड़ा जेवर आपकी अपनी मेहनत।*
- *जो हाथ सेवा के लिए उठते हैं वे प्रार्थना करने वाले होठों से अधिक पवित्र है।*
- *स्वार्थ में अच्छाईयां ऐसे खो जाती हैं, जैसे समुद्र में नदियां।*

-संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

मौत रे मुंढागे कींरो, जोर कहो चालै हो, राजा महाराजा सगला हारग्या
माटी री आ काया आखिर माटी में मिल ज्यावै हो
धन्य जमारो जो सुधारग्या।।

धरती आसमान जिण रे, डर स्युं थर थर कांपे हो
जमरे आगे वह भी लाचार है
क्रूर कषाई काल आगै लारै नहि देखे हो
बूढ़े टाबर रो कै विचार है। (1)

रोगांस्यु घिरयोड़ी काया, परिजन रो रो विलखै हो
डाक्टर हकीमांरी कतार है
सबरो स्हारो घर उजियारो चीर कलेजो चाल्हो हो
इन्जेक्शन ऑक्सीजन बेकार है। (2)

एक लो आयो है जीव, एकलो ही जासी हों
कुण कीरों जग में, सब अनाथ है
म्हेल मालिया नौकर चाकर धन परिजन सब रहग्या हो
आछी माड़ी करणी बस साथ है। (3)

पेट पकड़कर माता रोवै, बांह पकड़कर भाई हो
बहना रोवै राखी तींवार ने
विलविल करता टाबरियाने, छोडया साथी संग्याने
आछी छोडी कुरलाती नार ने। (4)

मगरूरी में अकडया अकडया फिरस्यो कठे तांई हो
आखिर मृत्यु रा बणस्यो पाहुणा
सगा संबंधी रहता घेर्यां, करता सेवा तन मन स्युं
बांने ही लागोला अण खावणा। (5)

मिनखां ने कुण झूरै झूरै अपने अपणे स्वारथने
कुण राखै घर में बोलो लाश ने
हाथां स्युं कर क्रियाकपाली घर का चिता जलावै हो
धिग् धिग् रे प्राणी थारी आश ने। (6)

तर्ज-तेजा...

सृष्टि का संगीत है ॐ

सृष्टा का स्वरूप और सृष्टि का संगीत है ओउम्। ब्रह्माण्ड में जो सृष्टा रूप में विधमान है, वहीं नाभिचक्र में ओम के रूप में प्रतिष्ठापित है, अर्थात पिण्ड (शरीर) में प्रणव ॐ का स्थान नाभिचक्र है। यही कारण है कि प्रकृति के पालना का सुन्दर उपहार शिशु संसार में अवतरित होने के पूर्व नाभिकाल (नाभिनाल) से संपृक्त रहता है और बिना दुग्धपान या अन्नप्राशन के इसी के सहारे जीवन की संजीवनी प्राप्त करता रहता है।

नाभिकील के कटते ही शिशु पारलौकिक से लौकिक, अमर से मरणधर्मा का गुणधर्म प्राकृतिकः अंगीकार कर लेता है। शिशु को पुनः अपनी शाश्वत अवस्था को प्राप्त करने के लिए, अर्ध्य से ऊर्ध्व की साधना करनी पड़ती है। यह सर्ततोभावेदन ॐ की साधना है।

शिशु नाभिकमल से संयुक्त इसलिए रहता है ताकि इसी के माध्यम से उसे अमृततुल्य संजीवनी की प्राप्ति होती है। इसी अमृतपान पर वह मातृगर्भ में किलोल करता है। इतना ही नहीं, जब वह नाभिकमल से संयुक्त रहता है सीधे सर्वाघाट से उसका सम्पर्क बना रहता है, उसका वह साक्षात्कार करता रहता है। यही कारण है कि शिशु का सारा क्रिया व्यापार प्रकृति से परे होता है।

ऋषि पतंजलि के योग का मूलमंत्र भी ओम की साधना है। अन्ततः प्राणायाम एवं योग के रथ जिसमें योगासन रूपी सहस्त्रों अश्व लगे हुए हैं। ओम् के धाम पर ही विश्राम पाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अन्ततः ओम की सफल साधना से ही मनुष्य की मनोवांछित सभी आध्यात्मिक अभिलाषाओं की पूर्ति होती है तथा वह अपने सत्य स्वरूप को पहचान पाता है। अ-उ-म् इन तीनों के मेल से ओम शब्द सिद्ध होता है जो अव्युत्पन्न होने के कारण ही ओम को ईश्वर कहा जाता है, क्योंकि ईश्वर भी अव्युत्पन्न है। रक्षण, गति, कांति, प्रीति, तृप्ति, अवगमन, प्रवेश, श्रवण, स्वायर्थ, याचन क्रिया, इच्छा, दीप्ति, वाप्ति आलिंगन, अहिंसा, दान, भाग और वृद्धि इन सब की सिद्धि ओउम् की साधना से होती है और इनकी सिद्धि होने पर ही जीव की मुक्ति होती है।

नाभि को नाभिकमल इसलिए कहा गया है क्योंकि वह कमलाकार है और कमल मात्र फूल का प्रतीक ही नहीं बल्कि ऊर्ध्व गमन का प्रमाण है। मनुष्य जब इन नाभिकाल अवस्थित ओम की साधना करता है तभी वह सच्चिदानंद सायुज्जता को प्राप्त करने की सुखानुभुति ओउम् नामक संगीत की प्रतीति है।

ओम को आत्मा की भाषा, अभ्यांतरिक आवाज, स्वर्णिम स्वर, अज्ञात से वार्तालाप, आहत ध्वनि, सभी नामों तथा रूपान्तरों की जननी तथा सृष्टि का संगीत कहा गया है। इन दि बिगिनिंग वाज दि वर्ड, दि वर्ड वाज विथ गॉड, दि वर्ड वाज गॉड ओम के विषय में ही कहा जाता है। ओम की साधना करने वाला कालजयी होता है। इच्छानुसार मृत्यु को प्राप्त होता है, सर्वज्ञाता और सम्पूर्ण सिद्धियों का अधिपति बनता है और उनकी सूक्ष्मता बढ़ जाती है।

ऊँ शब्द के आगे 3 का अंक लिया जाता है। तदुपरान्त आधा 'म' लिखा जाता है। 3 का अंक लिखने का अर्थ है उसे अपेक्षाकृत तीन गुणी क्षमता से बोला जाये। दुपरांत उसके साथ अधर्म को जोड़ दिया जाए।

मात्र इस एक संगीत में विश्व का सम्पूर्ण रस, जीवन का समग्र उदेश्य, उपलब्धियों का विश्वकोष, आनंद का अम्बर, आस्था का अमरलोक, उपासना का अर्थशास्त्र, आराधना आ अंकगणित तथा साधना का समाजशास्त्र छिपा हुआ है। ओम का उपासक अवणि की तरह स्थिर, सागर की तरह गंभीर तथा अम्बर की तरह विस्तृर्ण होता है।

प्रलय का प्रकोप, प्राण का भय, पृथ्वी का पार्थिक प्रलोभन तथा जीवन के अवसाद कुछ भी ओम साधक को प्रभावित नहीं करते। ओम साधक अहर्निश ओम मय अवस्था में यही गुनगुनाता रहता है अन्न न खाना, जल न पीना, ओम से नेह लगाना, पंख तेरा तब उड़ पाएगा, दूर बहुत है जाना रे, यह देश तो है बेगाना।

-डॉ. सुकन पासवान प्रज्ञाचक्षु

अनमोल वचन

धन से पुस्तक मिलती है, किन्तु ज्ञान नहीं।
धन से आभूषण मिलता है, किन्तु रूप नहीं।
धन से सुख मिलता है, किन्तु आनन्द नहीं।
धन से साथी मिलते हैं, किन्तु सच्चे मित्र नहीं।
धन से भोजन मिलता है, किन्तु भोजन नहीं।
धन से दवा मिलती है, किन्तु स्वास्थ्य नहीं।
धन से एकान्त मिलता है, किन्तु शान्ति नहीं।
धन से बिस्तर मिलते हैं, किन्तु नींद नहीं।

○ *साध्वी मंजुश्री*

भगवान् धरा पर आओ रे, सज्जयोति जलाओ रे,
करूणा का श्रोत बहाओ रे, सन्मार्ग दिखाओ रे।

चिन्ता की यह अग्नि हरदम, शक्ति पुंज जलाती,
विपदाँए बिजली सम कड़के, धड़कन बढ़ती जाती,
मन में प्रभु धैर्य बन्धाओ रे।

इच्छाओं के अमित गगन में, मंन यह पंछी उड़ता,
काम, क्रोध, मद, मोह सताए, सदा शिखर पर चढ़ता,
इन सबसे मुक्ति दिलाओ रे।

जीवन के हर कटु घुमाव में, सतत सफलता पाँऊ,
प्रलय पवन के झोंको में मैं, मंगल गीत सुनाँऊ,
समता का पाठ पढ़ाओ रे।

अन्तर की आँखे खुल जाए, यह वरदान मैं चाँऊ,
स्वस्वभाव में रमण करू मैं परमानन्द पद पाँऊ,
मंजू पावन बन जाओ रे।

तर्ज- ओ नाग कहीं जा बसियो रे

लोभ पर विजय

○ सौरभ मुनि

एक व्यक्ति था जिसका नाम रांका था और उसकी पत्नी का नाम नांका था। पति-पत्नी दोनों ही बड़े ऊंचे बीचार के थे। दोनों का भगवान में अनन्य प्रेम था। दोनों सुबह शाम भगवान के भजन कीर्तन में लगे रहते थे। जो कुछ भी उन्हें मिलता उसी में वे प्रभु का शुक्रिया कर संतोष से रहते थे। रांका जी बड़े गरीब थे। जमीन जायदाद कुछ भी नहीं थी। जंगल में लकड़ियां काट कर बेचते थे और उसी से अपना पेट पालते थे। लकड़ियों को बेचने से जो पैसा मिलता था, उसी से आटा-दाल खरीद लेते थे। घर जाकर खाना बना कर भगवान को भोग लगाते और फिर स्वयं खाया करते थे। रांका-बांका का यही प्रतिदिन काम था। कभी-2 लकड़ियां नहीं बिकती थी तो पति-पत्नी दोनों भूखे ही सो जाया करते थे। भगवान को लोग दीनबंधु कहते हैं। जिसकी खोज खबर कोई नहीं लेता, उसकी खोज गरीब निवाज प्रभु लेते हैं। रांका-बांका की ईमानदारी व भक्ति से भगवान रीझ गये। भगवान ने उनकी गरीबी को दूर करने का निश्चय किया। रांका जी रास्ते चलते हुए भी भगवान का नाम लिया करते थे, भगवान के प्रेम में डूबे रहते थे। रांका जी अपनी धुन में प्रभु का नाम लेते हुए चले जा रहे थे सहसा उनके पैरों से एक सोने की मोहरों से भरी थैली टकराई। रांका जी कुछ क्षण देखने के बाद गड़ा खोदकर उसे मिट्टी में गाड़ने लगे। तभी बांका भी उनके पास पहुंच गयी और उसने आश्यर्च से अपने पति से पूछा। यह आप क्या कर रहे हैं। रांका ने उत्तर दिया। रास्ते में सोने की मोहरों से भरी थैली पड़ी थी उसे मैं गड्ड़े में गाड़ कर मिट्टी डाल रहा हूं ताकी कहीं उसे देखकर तुम्हारे मन में लोभ न आ जाए। बांका ने कहा- 'आपने मेरे बारे में ऐसा क्यों सोचा जब आपके मन में लोभ पैदा नहीं हुआ तो मेरे मन में लोभ पैदा क्यों होगा मैं तो सोने को मिट्टी समान समझती हूं। बांका की यह बात सुनकर रांका बडे खुश हुए। तभी भगवान से बांका रांका की निर्लिपृता को देख कर रहा नहीं गया उन्होंने प्रकट होकर दर्शन दिए और कहा तुम दोनों देवता से भी अधिक श्रेष्ठ हो। सच में लोभ पर विजय प्राप्त करने वाला मनुष्य देवता से भी श्रेष्ठ होता है।

❖❖❖

गांधीजी की सीख

महात्मा गांधी अपना जन्मदिन बड़ी सादगी से साबरमती आश्रम के कार्यकर्ताओं के साथ मिल कर मनाते थे। एक बार सेवा ग्राम के लोगों ने उनका जन्मदिन अपने यहां मनाने का फैसला किया। जन्मदिन पर बड़ी संख्या में वहां के लोग गांधी जी को मुबारकबाद देने पहुंचे। सेवा ग्राम में गांधी जी का जन्म दिन मनाया जा रहा है, यह सोच कर कस्तूरबा गांधी पास के गांव से कुछ दीये ले आई। जब गांधी जी प्रार्थना सभा में पहुंचे तो वहां देसी घी के दीये जलते देख कर वह चौंके मगर उन्होंने कहा कुछ नहीं। प्रार्थना खत्म हुई तो गांधी जी ने पूछा, 'ये दीये कौन लाया है?' बा ने कहा, 'पास के गांव से खरीद कर लाई हूं।' गांधीजी ने फिर पूछा, 'और यह घी कहां से आया?' बा ने कहा, 'वह भी गांव के एक किसान के यहां से लाई हूं।' गांधी जी दुखी मन से बोले, 'आप ने यह अच्छा काम नहीं किया।' बा कुछ समझ नहीं पाई। उन्हें चुप देख कर गांधी जी ने फिर कहा, 'आप तो जानती हो कि देश के लाखों किसानों और मजदूरों को सूखी रोटी भी मयस्सर नहीं होती। खाने की बात तो छोड़िये, उन्हें तो देसी घी देखने को भी नहीं मिल पाता। इस हालत में हमारे जन्मदिन पर देसी घी का दीया जले यह देश के लोगों के साथ अन्याय है। देसी घी के दीये जलते देख कर तभी सुख मिलता जब देख के सभी बच्चों को दूध घी खाने को मिले। मुझे तो आश्चर्य है कि आप की आत्मा ने आपको ऐसा कार्य कैसे करने दिया।, 'बा को गलती का अहसास हो गया। उन्होंने कहा, 'अब ऐसी गलती नहीं होगी।'

-प्रस्तुति : राजेन्द्र मेहरा

गजल

सच को तू सच कहना सीख
सच को तू सच लिखना सीख

झूठा बनकर खूब जिया
सच्चा बनकर रहना सीख

बुरा लगेगा बहुत मगर
सच्चाई को सहना सीख

जग के झूठे ग्रंथालय में
सच की पुस्तक पढ़ना सीख

दादी मां के किस्सों में
सच्चे किस्से गढ़ना सीख

-संदीप फाफरिया 'सृजन'

सेवा का संकल्प

यह घटना उस समय की है जब इटली अपने एक पड़ौसी देश के साथ युद्ध लड़ रहा था। एक युवक एक पहाड़ी की चोटी पर बैठा हुआ दूरबीन से युद्ध का दृश्य देख रहा था। युद्ध में कुछ सैनिक मर चुके थे और कुछ अपने जीवन की अंतिम घड़ियां गिन रहे थे। सैनिकों की दयनीय दशा देखकर वह युवक अत्यंत द्रवित हो गया और उसकी आंखों से आंसू बह निकले। दरअसल वह युवक सम्राट नेपोलियन से मिलने पैरिस गया था, किंतु जब उसे पता चला कि सम्राट मोर्चे पर गए हुए हैं तो वह उनसे मिलने मोर्चे की ओर ही चल पड़ा था। किंतु मोर्चे का दृश्य देख कर वह सम्राट से मिलने की बात बिल्कुल ही भूल बैठा। तभी उसे सूचना मिली कि घायल सैनिक गिरजाघर में हैं तो वह तुरंत उनकी सहायता के लिए वहां जा पहुंचा और उनकी सेवा में लग गया। इस बीच युद्ध समाप्त हो गया।

अब उसके मन में यही बात कौंध रही थी कि कुछ भी हो, घायलों की सेवा के लिए एक ऐसा दल होना चाहिए जो तुरंत मौके पर पहुंच कर उनकी सहायता कर उन्हें नया जीवन प्रदान करे। उनके इस विचार को अंजाम देने के लिए घायलों की सेवा करने वालों का एक ऐसा दल तैयार किया इसके बाद उसने अपने अथक प्रयासों के इस दल को एक अन्तरराष्ट्रीय संस्था के रूप में मान्यता दिलवा दी।

अब वर्तमान में जब कहीं युद्ध छिड़ता है तो उस संस्था के सदस्य तुरन्त घायल सैनिकों की सेवा में जुट जाते हैं। वे सदस्य तटस्थ माने जाते हैं एक विशेष प्रकार की पोशाक पहनते हैं जिस पर एक विशेष चिन्ह बना रहता है। उस संस्था का नाम रेडक्रॉस है, जिसका संस्थापक वही युवक था। इस युवक का नाम जीन हेनरी दूना था जो जिनेवा के एक मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुआ था। प्रत्येक वर्ष जीन हेनरी के जन्मदिन 8 मई को रेडक्रॉस दिवस मनाया जाता है।

-प्रस्तुति : डॉ. सोहनवीर सिंह

अनमोल वचन

इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाय।
इस तरह न खर्च करो कि कर्जा हो जाय।
इस तरह न खाओ कि मर्ज हो जाय।
इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाय।
इस तरह न चलो कि देर हो जाय।
इस तरह न सोचो कि चिन्ता हो जाय।

शिलांग शिखर

मेघालय राज्य में खासी पहाड़ियां बहुत सुंदर हैं। ये पहाड़ियां नीले रंग के जंगलों से ढकी रहती हैं। यहां असंख्य कल-कल करती बहती नदियां, बरसाती नाले और नीली झीलें हैं। दूध जैसे सफेद रंग के जल वाले झरने हैं। पहाड़ों में अनेक रहस्यमय गुफाएं भी हैं। बारिश के मौसम में रंग-बिरंगे महकते फूल पहाड़ियां, घाटियों उनके ढलानों को ढक लेते हैं। आकाश में छाए घने दूधिया बादल मन मोह लेते हैं।

इस इलाके में खासी और जयंतिया जन जाति के लोग बसते हैं। प्रदेश की राजधानी शिलांग है। यहां का महान और शक्तिशाली शासक सीम माना जाता है। सीम को खासी पहाड़ियों में ईश्वरीय राजा मानते हैं। इनका मानना यह है कि जब ईश्वर बहुत प्रसन्न हुआ, तब उसने सीम को खासी देश पर राज्य करने भेजा।

बहुत पुराने समय की बात है। जगह-जगह चर्चा फैली हुई थी कि खासी पर्वतों की भाराई गुफाओं में एक बहुत सुंदर कन्या रहती है। ये गुफाएं पूमलाक राई नाम गांव के नजदीक थीं। जो उम्यांग नदी के किनारे बसा था। कहते हैं वह कन्या जलपरी थी। उसका रूप-रंग, नाक-नक्श, लम्बे केश, सुनहरा रंग और सांचे में ढला शरीर, हर किसी को मंत्रमुग्ध कर देते थे। वह झरने के पीछे बनी गुफा में रहती थी। अनेक खासी युवकों ने उसे रिझाने, अपने पास बुलाने और उससे शादी करने की कोशिश की। कई बार तो कुछ लोग उसे पकड़ने भी दौड़े, लेकिन वह संकरी गुफा में गायब हो जाती है।

इसी प्रदेश के एक युवक ने उस जलपरी से विवाह करने की ठानी थी। वह खासी युवक बहुत चतुर, बुद्धिमान और हठ का पक्का था। वह शक्तिशाली, गठे हुए शरीर, पैनी आंखों और आकर्षक व्यक्तित्व वाला युवक था। उसने जंगल में जाकर सबसे सुंदर और महकने वाला फूल तोड़ा फिर गुफा की ओर चल पडा। उस फूल की महक हवा के साथ दूर-दूर तक फैल गई। जलपरी उस फूल की गंध से मुग्ध हो गई। वह गुफा से बाहर निकली। सुंदर फूल को देखकर मचल उठी। उसे लेने के लिए आगे बढ़ी।

खासी युवक बहुत चतुर था। वह जलपरी को फूल न देकर पीछे हटता रहा। जलपरी मंत्रमुग्ध-सी उसकी ओर बढ़ती रही। अंत में वे खुले मैदान में आ गए। फूल लेने के लिए मचलती परी जब पास आई, तो युवक ने उसे पकड़ लिया। फिर उसे फूल दे दिया। फूल लेकर वह बहुत प्रसन्न हुई। अब वह युवक से पीछा छुड़ाने का प्रयास करने लगी। युवक की शक्ति के आगे उसकी एक न चली। अन्त में वह थक गई। बोली- 'तुम मुझे छोड़ क्यों नहीं देते''

युवक बोला- ''मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा। तुम मेरे साथ घर चलो। मैं तुमसे ब्याह करूंगा। तुम्हारी हर इच्छा पूरा करूंगा। कभी तुम्हें कष्ट नहीं होने दूंगा।''

जलपरी ने बहुत विरोध किया। परंतु खासी युवक भी बहुत चतुर था। वह मीठी-मीठी बातें कर, जलपरी को अपने घर ले गया। आखिर जलपरी को मानना पड़ा। परंतु उसने एक शर्त रखी- ''जब भी मुझे अपने घर की याद आएगी या मेरी इच्छा होगी, मैं अपने घर लौट जाऊंगी।''

युवक ने आत्मविश्वास से कहा- ''ऐसा अवसर कभी नहीं नहीं आएगा। मैं तुम्हें इतनी खुशियां दूंगा कि तुम कभी गुफा में लौटने की बात सोच भी नहीं पाओगी।''

दोनों ने एक-दूसरे की बात मान ली। शादी कर ली। जलपरी सामान्य युवती की तरह खासी युवक के साथ रहने लगी। उसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई थी। उसे फूल-मोहिनी के नाम से जाना जाता था क्योंकि युवक ने उसे फूल देकर पकड़ लिया था। युवक नौगरी गांव का रहने वाला था, इसलिए उसे नौगरी कंगोर के नाम से पुकारा जाता था।

दोनों सुख से रहने लगे। नौगरी जंगल में शिकार करता, नदी में मछली मारता। तरह-तरह के फल और मेवे लाता। जंगल और घाटी से सुंदर फूल तोड़कर अपनी पत्नी के लिए लाता। जलपरी ने अनेक पुत्र और पुत्रियों को जन्म दिया। परी बड़े लाड़-प्यार से अपने बच्चों का लालन-पालन करती थी। उसने उन्हें सभी राजसी गुण सिखाए। बड़ों का आदर-सम्मान करना और छोटों से प्यार करना सिखाया।

बहुत वर्षों बाद बच्चें बड़े हो गए। अचानक एक दिन जलपरी अपने पति से बोली- ''मैं अपनी गुफा में वापस जा रही हूं। मेरा बुलावा आ गया है।''

उसके पति और बच्चों ने रोकना चाहा। अनुरोध किया, समझाया, गिड़गिड़ाए। परंतु कोई असर नहीं हुआ। जलपरी गुफा की ओर चल पड़ी। फिर गुफा में घुसकर गुम हो गई। बच्चे प्रतीक्षा करते रहे। परंतु वह नहीं लौटी। दुखी मन से सभी लौट आए।

जलपरी ने अपने बच्चों का लालन-पालन इतनी अच्छी तरह से किया था कि उनके सुंदर स्वभाव व व्यवहार की कहानी दूर-दूर तक फैल गई थी। वैसे भी वे जलपरी की संतान थे, इसलिए पहले से प्रसिद्ध थे। बुद्धिमान होने के अलावा उनके अच्छे संस्कार और विनम्र स्वभाव हर व्यक्ति को प्रभावित करते थे। कोई उनसे कभी नाराज न होता। वे बड़ों का सम्मान करते थे अपनी उम्र के बच्चों से बहुत प्यार करते थे। उन्हें तरह-तरह की खाने की चीजें भी दिया करते थे।

एक रोज शिलांग राजदरबार के सामंतों और अन्य प्रतिष्ठित लोगों ने उन्हें एक मत से 'ईश्वर क बच्चों' की उपाधि दी। शिलांग राज्य का सीम यानी देवराज बना दिया। वे एक ऐसी ईश्वरीय शक्ति वाली महिला की संतान थे, जो पूरे क्षेत्र में सौंदर्य और अच्छे व्यवहार के लिए प्रसिद्ध थी। इस प्रकार ये सभी बच्चे दैवी शासक बने।

शिलांग शिखर, जो इस इलाके का सबसे ऊंचा पर्वत शिखर है, जंगलों से ढका रहता है। लोग यही मानते हैं कि यहां ईश्वर का निवास है। सीम शासक को इसीलिए दैवी शासक के रूप में आज भी सम्मान दिया जाता है।

-प्रस्तुति : साध्वी बसुमती जी

कविता

जलाने से चिराग जला करते हैं।
खिलाने से फूल खिला करते हैं
नहीं वक्त है किस्मत के भरोसे जीने का,
किस्मत की महक भी बनाने से ही बना करते हैं
जो दे न सके सुगंध वो फूल भी क्या,
मिले न रोशनी जिससे वो चिराग ही क्या,
जीने को तो सभी जीते हैं इस जमाने में
लेकिन जो न काम आ सके किसी के वो इंसान ही क्या
हँसते तो सभी हैं, रोतों को हंसाओ तो जानों
डूबते हैं जो, किनारे उन्हें लगाओ तो जानों
सुख की बगिया में अगर बहार मिले तो सभी लुटे
दुः ख की नैया में डुबने वालों की नौका को पार
लगाओ तो जानों।

-सुजीत कुमार झा
(योगाचार्य)

छिलके बडे काम के

काले लंबे खुले बाल, चेहरे पर दमकता गोरापन, हाथों में खनकती चूड़ियां, लाल टाप और काली जींस पहने हुए शबनम ने फ्रूट्स की दुकान से केले खरीदे और केले खाकर छिलके वहीं फैंक दिए तभी पास में खड़ी उसकी सहेली प्रिया बोल पड़ी, ''शबनम, शयद तुम्हें पता नहीं कि तुम इन छिलकों को भी विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन बनाने में इस्तेमाल कर सकती हो। इनमें सम्पूर्ण विटामिन्स सुरक्षित रहते हैं, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं।

फल-सब्जियों के छिलके स्वास्थ्य के साथ-साथ सौन्दर्य वृद्धि में भी बहुत सहायक होते है। थोड़ी सी सूझबूझ से आप भी फल-सब्जियों के छिलकों का विभिन्न प्रकार से उपयोग कर सकते हैं।

- पके केले के छिलकों पानी में उबालकर पानी को निकाल दें। अब उबले हुए छिलकों में बेसन, स्वादानुसार मसाला, हरी, मिर्च, बारीक कटा धनिया, अदरक आदि पीसकर मिला दें। इस मिश्रण की छोटी-छोटी गोलियां बना लें अब इन्हें धीमी आंच पर भूरा होने तक तलें। इन स्वादिष्ट कोप्तों को चटनी या सास के साथ सर्व करें।
- तरबूजों के छिलकों को मोटा-मोटा काटकर उन्हें धूप में सुखा लें। अब इन सूखे हुए छिलकों को जब चाहें, धीमी आंच पर तलकर चाय के साथ नाश्तें के रूप में सेवन करें।
- तरबूज के छिलकों के पेड़े बड़े स्वादिष्ट बनते हैं। आप तरबूज के छिलकों को इस प्रकार उतारें कि लाल गूदा अलग हो जाए। इसके बाद एक पतली सी परत उतार दें। अब छिलकों को चौकोर टुकड़ों को काटकर सब तरह से गोंद दें किसी भगोने में इन टुकड़ो को डालकर ऊपर से इच्छानुसार चीनी डाल दें। इसे अब धीमी आंच पर पकने दें। थोड़ी-थोड़ी देर में इसे हिलाते रहें ताकि पेड़े चासनी को अच्छी तरह से सोंख लें। जब चाशनी अच्छी तरह से सूख जाए तो भगोने को गैस से नीचे उतार दें। अब इसमे थोड़ा इलायची चुर्ण तथा केवड़ा जल डाल दें।
- आलू-परवल की सब्जी बनाते समय परवल के छिलकों को पीसकर मसाला भूनते समय डाल दें। इससे सब्जी का रस गाढ़ा हो जायेगा और सब्जी का स्वाद भी बढ़ जायेगा।
- संतरों के छिलकों को दूध में भिगोकर, पीसकर चेहरे पर लगाएं। चेहरे पर चमक और कांति आ जाएगी।

- संतरे के छिलको को धूप में सुखाकर बारीक चूर्ण बना लें। रोज रात को सोने से पहले एक चुटकी चूर्ण में दो-तीन बूंद नींबू के रस की मिलाकर इसे चेहरे पर लगएं। सुबह ठंडे पानी से धो लें। चेहरे पर कुछ ही दिनों में गजब का निखार आ जाएगा।
- नारियल के छिलकों को फैंकने के बजाय गोलाई में काटें। इन्हें आप मटके का ढक्कन बना सकते हैं। सावधानी से बीच में छेद करके इसकी सहायता से जलेबी बना सकते हैं।
- नींबू के छिलके में चुटकी भर नमक लगाकर इससे बर्तन साफ करें बर्तन चमक जायेंगे।
- स्नान करते समय नींबू का छिलका चेहरे पर से मैल कटकर चेहरा बिल्कुल साफ हो जाता है। तो इस तरह से आप भी बेकार समझे जाने वाले फल-सब्जियों के छिलकों का विभिन्न प्रकार से उपयोग करके लाभ उठा सकती हैं।

-प्रस्तुति : अरूण तिवारी

चुटकुले

1. पति : तुम हमेशा मूर्खों जैसी बातें क्यों करती रहती हो?
पत्नी : ताकि आप आसानी से मेरी बात समझ सकें।

2. सन्ता : आज डेड ने पिटाई कर दी।
बन्ता : क्यों?
सन्ता : पता नहीं, मैंने तो सिर्फ इतना पूछा था कि 'कमीने' फिल्म देखने चलोगे।

3. मोनू (सोनू से) : मां कहती है भैंस का दूध पीने से दिमाग तेज होता है।
सोनू : मां बेवकूफ बनाती है, अगर ऐसा होता तो भैंस का बच्चा साइंटिस्ट नहीं बन जाता।

4. ग्राहक : एक किलो गाय का दूध देना।
दूधवाला : लेकिन तुम्हारा बरतन तो बहुत छोटा है।
ग्राहक : ठीक है तो बकरी का दे दो।

5. चन्दन : ये पुलिस वाले खुद को बहुत स्मार्ट समझते हैं। मैंने आज उन्हें बेवकूफ बना दिया।
प्रवीण : वो कैसे?
चन्दन : पुलिस वाले मुझे चौहान समझकर पीटते रहे। मैंने नहीं बताया कि मैं चन्दन हूं।

मासिक राशि भविष्यफल-दिसम्बर 2010

○ डॉ.एन.पी मित्तल,पलवल

मेषः- मेष राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर शुभ फल दायक ही कहा जायेगा किन्तु कुछ सावधानियां भी बरतनी होंगी जैसे किसी अनजान व्यक्ति पर आंखबन्द करके विश्वास न करें। शत्रुओं से सावधान रहें। वाहन सावधानी से चलायें। कुछ अच्छे फल भी मिलेंगें। जैसे कुछ जातकों का रूका हुआ पैसा मिल सकता है। समाज में यश, मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। कोई शुभ समाचार मिल सकता है।

वृषः- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पराक्रम के बल पर श्रेष्ठ फल देने वाला है। किसी का उधार दिया हुआ पैसा आप इस माह वसूल कर सकते हैं। मित्रों से मदद मिलेगी किन्तु कोई अजनवी व्यक्ति नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकता है। यात्राएं सफल होंगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मिथुनः- मिथुन राशि के जातकों के लिए यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से मिश्रित फल दायक है। आय से व्यय अधिक होगा, अतः मानसिक चिन्ता का कारण बनेगा। कोई सगा, सम्बन्धी या मित्र ही आपके खिलाफ खड़ा हो जायेगा। नये कार्य सम्बन्धी निर्णय सोच समझकर लें। हां कुछ रूका पैसा आपका वापिस मिल सकता है।

कर्कः- कर्क राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते लभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। कार्य सम्बन्धी यात्रायें भी करनी होंगी जिनमें सावधानी अपेक्षित है। जब कोई निर्णय स्वंय न ले सके तो बुजुर्गों की सलाह एवं आशीर्वाद लें। विरोधियों से सावधान रहें। कोई न्यायालय में लम्बित केश सुलझ सकता है।

सिंहः- सिंह राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का आरम्भ व अंत अच्छा नहीं है तथा मध्य शुभ है। शुभ समय में भी मेहनत तथा यात्रायें काफी करनी पड़ेगी तब सफलता मिलेगी। अशुभ समय में शत्रु कार्य में अवरोध पैदा करेंगे। कोई रूपयों की अदायगी रूक सकती है। उधार भी लेना पड़ सकता है। एक्सीडेंट आदि का भय है।

कन्याः- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रम साध यलाभ देने वाला है। कार्यों की पूर्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम वांछित है। मित्र काम आएंगे व साझेदारी के कार्यों में सफलता के आसार हैं। किन्हीं जातकों का कोई पुराना रूका हुआ कार्य भी पूरा हो सकता है। नौकरी पेशा जातकों के लिए यह माह शुभ है। परिवार में तथा पत्नी से नौंक-झौंक सम्भावित है। अपने तथा अपनी पत्नी के स्वास्थ्य का ख्याल रखें।

तुलाः- तुला राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह उतार-चढ़ाव लिए होगा। आय से व्यय अधिक होने की सम्भावना है। किसी अप्रिय समाचार के मिलने से मानसिक चिन्ता बनेगी। द्वितीय सप्ताह कुछ राहत देने वाला है। मित्र जन काम आयेंगे। इसके पश्चात अचानक किसी लाभ की आशा है या कोई महत्वपूर्ण सूचना मिल सकती है।

वृश्चिकः- वृश्चिक राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभ फल दायक नहीं कहा जा सकता है। आय से व्यय अधिक होगा। आपका लिया हुआ कोई गलत निर्णय आपको हानि पहुंचा सकता है। किसी भी स्कीम में पैसा लगाने से पहले अच्छी प्रकार से सोचें तथा सलाह लें। साझेदारी के कार्यों में शुरू में फायदा दिखेगा।

धनुः- धनु राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से मासारम्भ शुभ नहीं है, फिर भी आप धीरे-धीरे अपना लक्ष्य पाने की ओर अग्रसर होंगे। आर्थिक स्थिति सुधरेगी। सामान की खरीद फरोख्त में सावधानी बरतें। कार्य की अधिकता वश आप अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं देंगे जिससे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। समाज में मान प्रतिष्ठा कई अवरोधों के चलते बनी रहेगी।

मकरः- मकर राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का उत्तरार्ध-पूवार्ध की अपेक्षा शुभ फल दायक रहेगा। शुभ समय में जहां आर्थिक लाभ होगा वहीं पर सामाजिक प्रतिष्ठा में भी लाभ होगा। मित्र व परिवार जन काम आएंगें। कोई भूमि-भवन सम्बन्धी लाभ भी सम्भावित है। अशुभ समय में कोई आपका मित्र ही शत्रु जैसा कार्य कर सकता है। सामाजिक मान सम्मान पर आंच आ सकती है।

कुम्भः- कुम्भ राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का पूर्वाध शुभ है तथा उत्तरार्ध शुभफल दायी नहीं कहा जा सकता है। शुभ समय में आर्थिक लाभ होगा। मित्रों से मेल-जोल में बढ़ोतरी आयेगी तथा इन जातकों का वर्चस्व बढ़ेगा। समाज में मान सम्मान बना रहेगा आत्म विश्वास में प्रगति होगी। अशुभ समय में गड़बड़ी रहेगी। शत्रुओं के विरोध के कारण मानसिक चिन्ता बनी रहेगी।

मीनः- मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अल्प लाभ वाला ही कहा जायेगा। सरकारी कर्मचारियों के लिए समय अच्छा है। विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धा आदि में कड़ी मेहनत के पश्चात सफलता मिलेगी। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। कोई भूमि-भवन सम्बन्धी प्रसंग विचाराधीन आ सकता है। यात्राएं जहां तक हो सके न करें। तीर्थ यात्रा कर सकते हैं। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

-इति शुभम्

परम पूज्य गुरूदेव महामहिम आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज, महान् विदुषी परमपूज्या संघ प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी महाराज, सरलमना साध्वीश्री मंजुश्री जी महाराज अपने धर्म परिवार के साथ मानव मंदिर में सानन्द विराजमान हैं। धर्म की प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। मानव मंदिर द्वारा संचालित सभी सेवा कार्य प्रगति पर है। 23 नवम्बर प्रातः 8:00 बजे दिल्ली-दूरदर्शन चेनल पर पूज्य आचार्यवर की 'अध्यात्म और कविता' विषय पर विशेष वार्ता का प्रसारण हुआ। पूरे देश में इस प्रसारण की व्यापक सराहना हुई।

मानव मंदिर विद्यार्थियों की प्रथम चरण की परीक्षाएं हो चुकी हैं। गुरूकुल के बच्चे अपने स्कूल में नये कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। स्कूल और मानव मंदिर का नाम ऊंचा कर रहे हैं। पूरा आश्रम परम पूज्य गुरूदेव की कृपा से स्वस्थ प्रसन्न और तरो-ताजा रहता है। आने वाले हर भक्त के जुबान पर एक ही बात रहती है कि ऐसी अनुभूति और शांति हर स्थान पर नहीं मिलती। पिछले दिनों दिवंगत श्री भंवरलाल जी सुराणा के परिवार-सदस्य पूज्य गुरूदेव के सानिध्य में उपस्थित होकर अपने पिताजी की तरह ही मिशन को अपनी सेवाएं देने का संकल्प व्यक्त किया। पूज्य गुरूदेव के संसारपक्षीय मौसी जी के परिवार ने भी अपनी दिवंगत माताजी के प्रसंग पर दर्शन करके सांत्वना प्राप्त की।

5 दिसम्बर को मानव मंदिर के प्रांगण में हो रहे वार्षिक उत्सव की तैयारियां जोर शोर से चल रही है इस बार पूज्य गुरूदेव की प्रभावशाली अमृतमय वाणी के साथ-साथ गुरूकुल के बच्चों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम विशेष आर्कषण का विषय होगा। इस अवसर पर आप महानुभाव अवश्य पधारे व कार्यक्रम का आनन्द उठाएं व संत जनों का आशीर्वाद प्राप्त करें।

देस रंगीला... रंगीला

'स्वर रंग' द्वारा बाल दिवस पर बेसहारा बच्चों के लिए रंगारंग कार्यक्रम

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। बाल दिवस के उपलक्ष्य में 'स्वर रंग' तत्वावधान में अनाथ एवं बेसहारा बच्चों के लिए एक रंगारंग सास्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रंग बिरंगे परिधानों में नन्हीं बच्चियों ने 'देस रंगीला' नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लिया। ये सभी बच्चे मानव मंदिर मिशन में आचार्य रूपचन्द्र जी के संरक्षण में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

इस अवसर पर 'स्वर रंग' द्वारा दीपावली के अवसर पर आयोजित बाल चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार भी दिये गये। सराय काले खां स्थित मानव मंदिर के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में योजना आयोग की सलाहकार श्रीमती नैनी जयशीलन उपस्थित थीं। 'स्वर रंग' की सचिव डॉ. विनीता गुप्ता द्वारा विजेताओं को ट्रॉफी प्रदान की गई। प्रतियोगिता में 4 से लेकर 17 साल के बच्चों ने भाग लिया। विभिन्न आयु वर्गों में विजेता रहे रोहन (6 वर्ष), अशोक (10 वर्ष), और नमन (14 वर्ष)। कार्यक्रम का सफल संचालन भी इन्हीं में बच्चों में एक गगन ने किया। इस आयोजन से सिद्ध हो गया कि हर बीज में बड़ा पेड़ बनने की संभावना छुपी हुई है।

(1)

नारी-रत्न श्रीमती भारती बहन कोठारी का विदेह-गमन

भगवान महावीर का निर्वाण-दिवस ज्याति-पर्व दीपावली। जीवन में ज्योति का अवतरण हो- इस भावना से जप-आराधना के लिए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी की सन्निधि में पूरा जैन-आश्रम परिवार उपस्थित था। तभी अचानक ह्युष्टन, टेक्सास, अमेरिका से फोन-संवाद मिला कि मातृ-हृदया श्रीमती भारती बहिन अभी-अभी इस संसार से बिदा हो गई है। इस अप्रत्याशित संवाद से पूरा आश्रम-परिवार स्तब्ध/अवाक् था। पूज्य गुरूदेव तथा साधु-साधवी-संघ के प्रति भारती बहिन का मन श्रद्धा/मंगल भाव से भरा था, वहां गुरूकुल के बच्चों के लिए वे मातृ-वत्सला थीं। यद्यपि पिछले कुछ समय से वे अस्वस्थ चल रही थीं। किन्तु अभी उनको स्वास्थ्य-लाभ सही दिशा में हो रहा था। तीन-चार दिन पहले पूज्यवर के साथ हुई उनकी वार्ता आरोग्य-लाभ की दृष्टि से काफी संतोषजनक थी। फिर भगवान महावीर के निर्वाण-दिन को भारती बहिन ने अपने देह-विलय के लिए एकाएक क्यों चुन लिया? क्या यह महज एक संयोग है अथवा किसी भावी का विशेष संकेत?

इस प्रश्न पर अपने उद्गार प्रकट करते हुए पूज्य आचार्यश्री ने कहा- भारती बहिन का पिछले बीस वर्षों का जीवन मेरी आंखों के सामने हैं। उनकी संयम-साधना और भक्ति-आराधना अनुत्तर थी। आगम-वाणी में साधनाशील व्यक्ति के लिए एक शब्द आता है- भावियप्पा अर्थात् भावितात्मा यानि आत्मभाव में रमण करने वाली आत्मा। ऐसा ही था भारती बहिन का जीवन। परिवार के सारे कर्त्तव्यों का पालन करते हुए भी जल-कमलवत् उनका जीवन अनासक्त था। कषाय की अल्पता, कथनी-करनी की एक रूपता, सत्य को कहने और सत्य में रहने का साहस, कहीं छल-कपट नहीं, कहीं प्रदर्शन-दिखावा नहीं, नाम और यश की लिप्सा नहीं, सुख-दुःख में समता की प्रतिमूर्ति, अंतिम असाध्य बीमारी में तो जैसे उन्होंने हंसते-हंसते कर्मों की जटिल जंजीर को तोड़ गिरा दिया। ऐसे जीवन को देखकर ही मेरा मन कहता है-

आत्म-जगत की सितारा थीं भारती बहिन
बेसहारों का सहारा थीं भारती बहिन
उनकी समतामयी साधना देखकर लगता है
भव-सागर का किनारा थीं भारती बहिन।

ऐसी दिव्य भावनामयी भारती बहिन ने अपने देह-विलय के लिए भगवान महावीर का निर्वाण-दिवस चुना, इसका यही संकेत है कि उनकी आत्मा ने महाविदेह क्षेत्र के लिए ही इस संसार से महाप्रयाण किया है। जैन मान्यता के अनुसार महाविदेह क्षेत्र वह लोक है, जहां जन्म लेनेवाली आत्मा को निर्वाण-सुख और परमात्म-पद मिलता ही है।

विशेष उल्लेखनीय यह है भारती बहिन का यह जीवन भी प्रबल पुण्य-योग था। पति के रूप में श्री वीरेन्द्र भाई जैसे नेकदिल कर्तव्य-परायण इन्सान, विनीत संस्कारवान् संतान प्रशांत एवं श्रद्धा तथा सेवा-समर्पित मधुर-भाषी पुत्र-वधू शीतल, ऐसा मानसिक सुख शांति-प्रद परिवार भी पुण्य-योग से मिलता है। सोने में सुगंध यह कि पूरे परिवार ने इस अकल्पित वियोग-घड़ी में भी मोह-रहित रहकर आत्म-दृष्टि का परिचय दिया। माया-मोह से मुक्त ऐसी आत्मा के लिए मोह-शोक होना भी नहीं चाहिए।

परिवार-सुख की दृष्टि से वे पुण्यात्मा थीं
तत्त्व-समझ की दृष्टि से वे धर्मात्मा थीं
मानापमान, सुख-दुःख में सम रहनेवाली
आत्म-रमण की दृष्टि से वे दिव्यात्मा थीं

आध्यात्मिक भूमिका पर हमारा भारती बहिन के साथ अभिन्न आत्मीय सम्बन्ध था। हम चाहे भारत में हों अथवा अमेरिका-कनाडा में, वे एक धर्मशीला बहिन का दायित्व पूरी तरह से निभाती थी। मानव-मंदिर गुरूकुल के बच्चों के लिए उनके मन में मां जैसा प्यार था।

परिवार, समाज-सेवा और धर्म-आराधना मय उनके जीवन को देखकर मैं कह सकता हूं वे नारी-रत्न थीं। भारतीय संस्कृति की दृष्टि से वह नारी बड़ी सौभाग्यवती होती है जो पति के हाथों में जाती है। यह सौभाग्य हमारी भारती बहन को मिला।

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी ने अपने संवेदना-संदेश में कहा- भारती बहिन का विवेक प्रखर था। जैन-संस्कारों में पली-पुसी भारती बहिन विचारों में बड़ी प्रबुद्ध प्रगतिशील थी। अनाथ बच्चों के संस्कार-निर्माण कार्य को वे मंदिर-निर्माण से कम नहीं मानती थी। पूज्य गुरूदेव के प्रति सर्वात्मना समर्पित थीं। मैं इस प्रसंग पर श्री कोठारी जी एवं सुपुत्र प्रशांत तथा पुत्रवधू शीतल को यही कहना चाहती हूं कि भारती बहिन के इस अभाव को आप उसी आध्यात्मिक तथा सेवा-भावना की ऊंचाइयों से भरें।

दिवंगत आत्मा के प्रति जैन आश्रम परिवार तथा रूपरेखा पत्रिका परिवार की भाव भीनी विनम्र श्रद्धांजलि।

---

(2)

श्री रणजीत सिंह जी बैद के आकस्मिक निधन पर अपने सांत्वना-संदेश में पूज्या संघ-प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी ने कहा- रणजीतसिंह के आकस्मिक असामयिक देहावसान के संवाद पर एक बार तो विश्वास ही नहीं हुआ। सुन तो यह रहे थे कि कमलसिंह के पौत्र तथा राकेश के पुत्र मृणाल की शादी पर रणजीतसिंह लाडनूं पहुंच रहे हैं। बीच में ही यह दुर्घटना घटित हो गई। इससे पूरे परिवार का विचलित होना स्वाभाविक है। किन्तु होनी के आगे सब निःशस्त्र हो जाते हैं। रणजीतसिंह बैद-परिवार का एक होनहार सदस्य था। बहुत ही योग्य, बहुत ही व्यवहार-कुशल और मिलनसार। परिवार के यश को खूब आगे बढ़ाया। समाज-सेवा और धार्मिक गतिविधियों में भी सदा अग्रणी रहता। उसके चले जाने से न केवल वैद-परिवार अपितु पूरे तेरापंथ समाज में कमी महसूस की जाएगी। संवेदना के इन क्षणों में उनकी धर्म-पत्नी तथा सुपुत्र प्रकाश तथा प्रमोद से यही कहना है कि मोह-राग तथा शोक से दूर रहते हुए परिवार के यश को आगे बढ़ाएं तथा रणजीत सिंह की कमी की पूर्ति करें।

पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज ने कहा- जीवन में कुछ क्षण बड़ी कठिन परीक्षा के आते हैं। इन क्षणों में आप धर्म-और धीरज को धारण करें। भगवान महावीर की वाणी को अपने जीवन का संबल बनायें।

संवेदना-स्मृति के इन क्षणों में हमारा मंगल-पाठ, मानव मंदिर गुरूकुल तथा रूपरेखा पत्रिका-परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि। दिवंगत आत्मा शांति, सद्गति और बंधन-मुक्ति की दिशा में अग्रसर हो, यही मंगल कामना।

पूज्यवर तथा पूज्या साध्वीश्री के संवेदना-संदेश पर प्रकाश वैद ने बार-बार कृतज्ञता ज्ञापित की।

-स्वर रंग संस्था द्वारा बाल दिवस पर रंगारंग कार्यक्रम में भाग लेते हुए गुरूकुल के बच्चे।

-सांस्कृतिक कार्यक्रम देती हुई बालिकाएं।

-पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या साध्वीश्री के साथ सौरभ मुनि, स्वर-रंग की महासचिव डॉ. विनीताजी तथा पदक-विजेता छात्र।

-गुरूकुल छात्र शुभम् जैन द्वारा निर्मित चिन्ह दिखलाते हुए (बायें से) डॉ. विनीता जी, शुभम् जैन, सौरभ मुनि, पूज्य गुरूदेव तथा योजना आयोग की सलाहकार श्रीमती नैनी जयशीलन।